185
H 13 P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 185

1349/1071

891.431
A2 11

1411

...ED.
14 DEC. 1931
...EPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 185
Date 3.12.71
GOVT. OF INDIA

* बन्देमातरम् *

आजाद भारतवर्ष

सुनेंगे कल का न वादा,
आज के बदले।
न लेंगे हर्गिज़ बहिश्त भी हम
स्वराज के बदले॥

संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक—
पं० प्रभुनारायण मिश्र
स्टेशन रोड, गया।
और
दशाश्वमेध, बनारस सिटी।

प्रथमबार] १६३१ [मूल्य -)

क्या था, पहिले ये भारत, बताया करो।
बहिनो, घर घर में चर्खा चलाया करो॥
शादी व्याह में जब कि था, चर्खे का चलन।
नारियाँ हिन्दू-मुसलमाँ की, समझती थीं सगुन॥
साँची, सुन्दर ये बातें, सुनाया करो।
बहनो, घर घर में चर्खा चलाया करो॥
शिल्प औ वाणिज्य सारा, नष्ट प्रायः हो चुका।
"गुप्त" गौरव आज भारत भाग्य भी हत हो चुका॥
पैसा, खर्चे फजूली बचाया करो।
बहिनो घर घर में चर्खा चलाया करो॥

२

प्यारे भाई न दिल को दुखाना कभी।
आँसू मेरे लिये न बहाना कभी॥
मैं तो जाता हूँ मगर अब तुम से कहे जाता हूँ;
माता के लिये सर देके सभी दुख दर्द सहे जाता हूँ;
प्यारी माता का दिल न दुखाना कभी।
आँसू मेरे लिये न बहाना कभी॥

* बन्देमातरम् *

आजाद भारतवर्ष

१

बहिनो, घर घर में चर्खा, चलाया करो।
खद्दर, अपने ही घर में, बनाया करो॥
काम से फ़ुर्सत मिले, माँ बन्धु को लो साथ में।
देश सेवा हो हृदय में, चक्र चर्खा हाथ में॥
उनको, भारत पै मरना, सिखाया करो।
बहिनो घर घर में चर्खा, चलाया करो॥
हिन्दू नारी धर्मबल पर, कर चुकी हैं क्या नहीं।
वंशजों में तुम भी उनके सोचती क्या हो नहीं॥

लगा के तू फाँसी करो शाद दिलको ।
यह तेरे ही रोने का सामान होगा ॥
नहीं होगा इससे अमन याद रखना ।
तेरा तङ्ग हर दम यहाँ औसान होगा ॥
हम आते हैं लेकर जन्म फिर दुबारा ।
वहीं संग में सब बम्ब का सामान होगा ॥
हमें आश पूरी नज़र आ रही है ।
कि कुछ दिन का तू और मेहमान होगा ॥
चढ़ादे तू फाँसी समझ हमको कांटा ।
स्वर्ग का हमें यह तो वीमान होगा ॥
सफल हुआ उसका जन्म लेना जहाँ में ।
जो अपने वतन पै यों कुरबान होगा ॥
अमर यहाँ कब तक भला तुम रहोगे ।
आखिर तो प्राणों का अवसान होगा ॥
प्रभु से करा लेंगे इन्साफ वहां पर ।
फिर देखेंगे कितना वहां अभिमान होगा ॥
सुनो आज भारत के तुम नौजवानों ।
मेरे बाद तुम्हारा ही इमतहान होगा ॥

हम सभों का गर तुम्हारे दिल में कुछ भी हो गरूर,
माँ का बन्धन काटना है ख्याल रखना ये जरूर;
आगे जालिम के सर न झुकाना कभी।
आँसू मेरे लिये न बहाना कभी॥
याद मेरी राजगुरु, सुखदेव की गर आयगी,
धर्म सच्चा वो तुम्हारा भी तुम्हें बतलायगी;
खाली नामो पै मेरे न रोना कभी।
आँसू मेरे लिये न बहाना कभी॥
बल्कि वो तुम काम करना जैसे जीतेन्द्र दास का,
सोचते रहना हमेशा ज़ालिमों के नाश का;
"गुस" राहे गुलामी न जाना कभी।
आँसू मेरे लिये न बहाना कभी॥

२

लगा करके फाँसी ही क्या मान होगा।
रहे याद तू भी परेशान होगा॥
अगर जान माँगी तो क्या तुमने माँगा।
मेरी जान से तुझको नुकसान होगा॥

क्यों प्रतिज्ञा पत्र पर दस्तखत किये बेफायदा।
अपने ही हाथों से इज्जत का घटाना छोड़ दो॥
सेठ साहूकार हो तुम लक्ष्मी के लाल हो।
भव्य भारतवासियों लुटिया डुबाना छोड़ दो॥
गान्धी बाबा का रहम क्या तुम्हें बिलकुल नहीं।
वो तो खुद दुखिया हैं उनका दिल दुखाना छोड़ दो॥
वालण्टियर द्वारे तुम्हारे जान तक दे जायँगे।
सोचो दिल में भाइयों आफत का ढाना छोड़ दो॥

६

कट कट के मरना होना॥ टेक॥
आओ वीरों मर्द बनो अब जेल तुम्हें भरना होगा।
सत्याग्रह के समर-क्षेत्र में आ आ कर डटना होगा॥
कट कट के मरना होगा॥ टेक॥
सूर लड़ाके मर्दाने हैं पैर हटाते कभी नहीं।
मरते मरते माता का अब फर्ज अदा करना होगा॥
कट कट के मरना होगा॥ टेक॥

यह व्यर्थ नहीं जायेगा खून हमारा।
स्वतन्त्र इसी से हिन्दोस्तान होगा॥

४

दिन खून के हमारे, प्यारे न भूल जाना।
खुशियों में अपनी हम पर, आँसू बहाते जाना॥
सैयाद ने हमारे, चुन चुन के फूल तोड़े।
बीरान इस चमन में, अब गुल खिलाते जाना॥
गोली को खा के सोये, जलियान बाग में हम।
सूनी पड़ी कबर पर, दीया जलाते जाना॥
हिन्दू-मुसलिमों की, होती है आज होली।
बहते हमारे रंग में, दामन भिगोते जाना॥
कुछ कैद में पड़े हैं, हम कब्र में गड़े हैं।
दो बूँद आँसू इन पर, प्रेमी बहाते जाना॥

५

अब विदेशी माल बाहर से मँगाना छोड़ दो।
खासा मलमल डोरिया तन से लगाना छोड़ दो॥

सब सितम सह के भी चुपचाप रहा करते हैं।
तो भी तुर्रा है कि हम लोग ज़बर करते हैं॥
एक से एक बशर रोज़ मरा करते हैं।
हम जो मरते हैं तो औरों को अमर करते हैं॥
किसकी हस्ती है जिसे पस्त न करके छोड़ें।
सब्र की आह से जादू का असर करते हैं॥

८

भगतसिंह तुम्हें फिर से आना पड़ेगा।
हुकूमत को जलवा दिखाना पड़ेगा॥
जो चोरी से धोके से मारा है तुमको।
मजा इसका इनको चखाना पड़ेगा॥
उठो वीर शेरों यही वक्त है अब।
तुम्हें लाल झण्डा उठाना पड़ेगा॥
हुकूमत से कह दो खबरदार हो जा।
यही गम तुझे भी उठाना पड़ेगा॥
हमारे कलेजे में खूं बह रहा है।
इसी खूं में तुझको बहाना पड़ेगा॥

वक्त नहीं है ऐ वीरों अब गाफिल होकर सोने का।
दौड़ चलो मैदानों में माता का दुख हरना होगा॥
कट कट के मरना होगा॥ टेक॥
याद करो माता का तुमने बहुत दूध है पान किया।
दूध पिये की लाज बहादुर किसी तरह रखना होगा॥
कट कट के मरना होगा॥ टेक॥
शेर मर्द हो बीर बाँकुड़ा याद करो कर्तव्यों का।
मातृ-वेदी पर हँसते हँसते कट कट के मरना होगा॥

७

क्या समझते हो कि हम जेल का डर करते हैं।
हम जो करते हैं उसे हो के निडर करते हैं॥
सर को धर करके हथेली पर सफ़र करते हैं।
सामना मौत का करने को जिगर करते हैं॥
तीर, तलवार, तवर, तोप की ताक़त क्या है।
हम इशारे से कयामत का असर करते है॥
आग पानी में लगा देना कोई बात नहीं।
सच तो यह है कि हमीं लोग सबर करते हैं॥

हमारे वास्ते जंजीर तौक़ गहना है।
जिसे कि शौक़ से सब लीडरों ने पहना है॥
समझ लिया है कि हमें रंजो-दुख सहना है।
मगर ज़बाँ से कहेंगे वही जो कहना है॥
सुनेंगे कल का न वादा आज के बदले।
न लेंगे हरगिज बहिश्त भी हम स्वराज्य के बदले॥
पिन्हाने वाले गर बेड़ियाँ पिनायेंगे।
खुशी से कैद के गोशे को हम बसायेंगे॥
जो सन्तरी दरो जिन्दा में सो भी जायेंगे।
यह राग गाके उन्हें नींद से जगाएँगे॥
सुनेंगे कल का न वादा आज के बदले।
न लेंगे हरगिज़ बहिश्त भी हम स्वराज्य के बदले॥

१०

अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियाँ होगा॥
चखा देंगे मजा बर्बादिये गुलशन का गुलचीं को।
बहार आ जायगी जिस दम कि अपना आशियाँ होगा॥

न कानून है कुछ न है कुछ हुकूमत ।
शहनशाह जवाहर बनाना पड़ेगा ॥

६

सुनेंगे कल का न वादा आज के बदले ।
न लेंगे हरगिज़ बहिश्त भी हम स्वराज्य के बदले ॥
हम जवाँनाने वतन हैं नहीं डरने वाले ।
मादरे हिन्द के हैं कदमों पर मर मिटने वाले ॥
गम अलम दर्द मुसीबत के हैं सहने वाले ।
झूठ कहते नहीं हम सच के हैं कहने वाले ॥
सुनेंगे कल का न वादा आज के बदले ।
न लेंगे हरगिज बहिश्त भी हम स्वराज्य के बदले ॥
वतन परस्त शहीदों की खाक लायेंगे ।
हम अपने आँसू का सुर्मा उसे बनायेंगे ॥
गरीब माँ के लिये दर्द दुःख उठायेंगे ।
यही कयामें वफा कौम की सुनायेंगे ॥
सुनेंगे कल का न वादा आज के बदले ।
न लेंगे हरगिज़ बहिश्त भी हम स्वराज्य के बदले ॥

१२

छोड़ दे सय्याद बुलबुल का सताना छोड़ दे
क्यों कहें यह गम तराना आबोदाना छोड़ दे ॥
बह चली तेरी जवानी चीखती बादे खिजाँ।
होश में आजा मुसाफिर जुल्म ढाना छोड़दे ॥
तेरे जैसे सैकड़ों मगरूर आखिर चल बसे।
इस असीरे बेकसों का खूँ बहाना छोड़ दे ॥
देखली गुस्ताखियाँ और देखली मीठी हँसी।
अब तो ज़ालिम आशिकों का आज़माना छोड़ दे ॥
पूरी आजादी कि ख्वाहिश इस दिले बिस्मिल में है।
है यही अरमाँ हमारा आशियाना छोड़ दे ॥

१३

निकलपड़ो अब बन कर सैनिक खौला है खून जवानोका।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का ॥
धर्म क्षेत्र में डंडे की वर्षा हो कुछ पर्वाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे निकले मुँह से आह नहीं॥

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहाँ औ तू कहाँ होगा॥
शहीदों की चिताओं पर जुटेंगे हर बरस मेले।
वतन पै मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥
कभी वे दिन भी आवेंगे जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा॥

११

भाइयों सोचो उठो, हालत सँभालो सो चुके।
राजगुरु सुखदेव और सरदार के खूँ हो चुके॥
वो दिलावर शेरे दिल थे चाहते इन्साफ़ थे।
भाइ होकर भाइ का उपदेश भी क्या खो चुके॥
पुत्र थे वीर माता का उन्हें कुछ ख्याल था।
शक्तियाँ उनमें भरी थीं, शक्ति सेवक हो चुके॥
काम जीतेन्दास से वीरों का जो कुछ था बचा।
बलिदान उन पर आत्मबल के वीर तीनों हो चुके॥
धर्म अपना भी यही है जो बचा पूरा करे।
"गुप्त" रखते शक्तियों को हम सभी कुछ खो चुके॥

हण्टर पड़ें, भूखों मरें, पर उफ न करें हम,
सब जुल्म जोर हम सहें इस मुल्क के लिये ॥
मन्दिर हो जेल और तख्त स्वर्ग की सीढ़ी,
मैं इसका पुजारी बनूँ इस मुल्क के लिये।
'बिसमिल' 'यतीन' 'दत्त' से न कम रहूँ कभी,
शूली पे उछल चढ़ पड़ूँ इस मुल्क के लिये ॥
जब तक कि दम में दम रहे यह आरजू रहे,
दे दूं हजार बार जान मुल्क के लिये।
छुट जाऊँ गुलामी से या मिल जाऊँ खाक में,
अच्छा यही है मर मिटूँ इस मुल्क के लिये ॥
क्या क्या लिखें कैसे लिखें हम दिल की हसरतें,
लिखने को लहू चाहिये इस मुल्क के लिये।

१५

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा।
खिजाँ से खूब उजड़ेगा अरे जालिम चमन तेरा ॥
सताले और थोड़े दिन सेबे दिल बेगुनाहों को।
यहाँ से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ॥

जेल यातना हो निर्दय दल करें गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरण कर वीरो सहते जाओ अत्याचार॥
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का।
भगवन भला करें सब ही का बने यशस्वी बृटिश निशन॥
होय निहत्थों का बलिदान शहरों गावों के दरम्यान।
नर नारी बच्चों को गोरे अत्याचारी खूब हने॥
भारत के कोने २ में जलियां वाला बाग बने।
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुँ दिश खून जवानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का॥

१४

वह दिन खुदा करे कि हों पावों में बेड़ियां,
हाथों में हथकड़ी हो इस मुल्क के लिये।
तौक हो गले में कातिल भी हो वहाँ,
होऊं तड़फता जेल में इस मुल्क के लिये॥
जल्लाद वहाँ तेग लेके, कत्ल को आवे,
मैं सर झुकालूं शौक से इस मुल्क के लिये।

आसमाने पीर भी चक्कर में है गर्दिस में है।
रङ्ग लाई देखिये क्या नौजवानी दास की॥
पुर असर है, दर्द में डूबी हुई है किस कदर।
दिल अगर है तो सुनो दिल से कहानी दास की॥
फाकामस्ती में भी मस्तों की तरह वह मस्त था।
गोया हिम्मत की नमूना थी जवानी दास की॥
मिट नहीं सकती मिटाए गर्दिशे इस आसमां।
अन्त तक कायम रहेगी यह निशानी दास की॥
खुलकर ऐ 'बिसमिल' यही दुनिया को कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की॥

समाप्त।

हमें लाचार कर तूने झुकाया खूब चरणों में।
हमीं विपरीत अब इसके विलोकेंगे नमन तेरा॥
अरे कायर निहत्थों को रँगाया पेट के बल क्यों।
लखेंगे शीघ्र ही हम भी अरे पापी पतन तेरा॥
बहुत अब कर चुका शासन यहाँ से अब उठा आसन।
हमारा देश है भारत नहीं है यह वतन तेरा॥
दबाले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को।
निहत्थे निर्बलों की आह से होगा निधन तेरा॥
दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन कायम।
करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा॥
मिलेगी आत्मबल को जय दमन तेरे पशु बल पर।
चकित संसार देखेगा मिटेगा जब चमन तेरा॥

१६

क्या लिखें आजाद होकर हम कहानी दास की।
कैद ही में कट गई सारी जवानी दास की॥
चलते फिरते खतम हो यों जिन्दगानी दास की।
सुबह पीरी बनगई शामे जवानी दास की॥

Printed at the Shree Press, Benareas City.

चार आने का टिकट भेजकर मँगा लीजिये १६ पुस्तकें।

ग़ज़लियात दिलबहार	=)	भजन रत्नाकर बड़ा	=)
ग़ज़लों का नजरा	)॥	भजन नौरत्न	)॥
ग़ज़ल बहार	)॥	भजन भण्डार	-)
ग़ज़ल पचीसी	)॥	भजन प्रभाती	-)
ग़ज़ल कौवाली	)॥	भजन रामायण	-)
ग़ज़ल गुलबहार	-)॥	भजन सरोवर	)॥
ग़ज़ल भण्डार	)॥	भजन रत्नाकर छोटा	)॥
ग़ज़ल गुलज़ार	-)॥	भजन मुक्तावली	=)

१) रुपये की पुस्तकें ।) आ० में जावेंगी।

* रामायण मध्यम *

लीजिये "थोड़े दाम की कामरी आवै गाढ़े काम" सुन्दर छपाई और सस्ता दाम तिस पर ग्लेज कागज क्या ही सोने में सुगन्ध है। मूल्य सिर्फ— २)

शायरी बहार बड़ी	=)॥	चौताल चन्द्रिका	-)॥
सावन गुलअनार	)॥	चौताल चूड़ामणि	-)
सावन गुलदस्ता	)॥	चौताल चित्तविलास	-)॥
सावन का सुगना	)॥	चौताल चिन्ताहरण	-)
सावन की काली घटा	)॥	चौताल पचीसी	)॥
सावन की छमकती परी	-)	चौताल मनमोहन	-)
सावनकीतड़पतीबिजली	)॥	चौताल बसन्त	-)
रंगीला सावन	)॥	चित्रकूट महात्म्य	=)

कुल पुस्तकें १) रु० की ।) का टिकट भेजकर मँगालें।

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

पं० प्रभुनारायण मिश्र, स्टेशन रोड, गया।

और दशाश्वमेध, बनारस सिटी।